Date 3/7/20

WESTERN PHILOSOPHY

अनुभववाद (Empiricism)

सोलहवीं - सत्रहवीं शताब्दी में देकार्त ने बुद्धिवाद को ज्ञान का साधन माना। स्पिनोज़ा और लाइबनीज ने भी देकार्त का समर्थन किया, अठारहवीं उन्नीसवीं सदी में ज्ञान का स्रोत इन्द्रिय प्रत्यक्ष को माना गया। लाइबनीज के अनुसार मानव-मन में अनुभव के पूर्व कुछ भी नहीं रहता है, केवल बुद्धि को छोड़कर। लेकिन लॉक ने अंतिम वाक्यांश को नहीं स्वीकारा है, उनके अनुसार मानव-मन में अनुभवपूर्व कुछ भी नहीं रहता। मन बिल्कुल साफ स्लेट की तरह होता है, लेकिन जब हमारी इन्द्रियाँ किसी वस्तु से सम्पर्क स्थापित करती है, तो वस्तु की संवेदना सरल प्रत्यय के रूप में हमारे मन में आती है, मन सरल प्रत्यय को ग्रहण करता है, और उन्हें एकत्रित करके जटिल प्रत्यय बनाता है, जटिल प्रत्यय द्वारा वस्तु का ज्ञान होता है। उदाहरण— जब मेरी आँखें कलम को देखती है, तो कलम के रंग-रूप आकार आदि की अलग-अलग संवेदनाएँ उत्पन्न होती है, और उन संवेदनाओं को मन ग्रहण करता है, इन अलग-अलग संवेदनाओं को मन एक जगह जोड़ता है, तब मैं जानता हूँ कि कलम काला है और जेल (Gel) नाम का है

बर्कले के अनुसार जब हमारी इन्द्रियों का सम्पर्क किसी वस्तु से होता है, तो उस वस्तु के प्रत्यय हमारे मन में आते हैं और उस वस्तु को हम जानते हैं, वह वस्तु प्रत्यय मात्र है, जहाँ लॉक ने वस्तु की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकारा है, वहाँ बर्कले ने वस्तु को मानसिक प्रत्यय माना है।